आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:16-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को अपनी श्रेष्ठ श्रीमत् देकर, शूद्र मनुष्य से सर्व-श्रेष्ठ दैवी-देवता बनाने वाले, ऊंच ते ऊंच बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - एक बाप की श्रीमत् तुम्हें २१ पीढ़ी का सुख दे देती है, इतनी न्यारी मत बाप के सिवाय और कोई दे नहीं सकता, तुम श्रीमत् पर चलते रहो.

लास्ट 63 जन्मो से शास्त्रों की, धर्म-गुरुओं, सन्यासीओं की मत से हमारा क्या हाल हुआ है यह तो हम सब जानते हैं. अब यह एक जन्म परमात्मा की मत पर चलना हैं क्योंकि इसे ही हम मनुष्य से दैवी-देवता बनते हैं. परमात्मा की मत पर चलने से ही हमें २१ जन्म अथाह सुख और शांति प्राप्त होती हैं.

बाबा कि आज की मुरली में कही गई श्रीमत् को हम अपनी आत्मिक स्थिति में रहकर बाप की याद में पढ़ेंगे तो हमें बाप से ईश्वरीय श्रीमत् को फ़ोलो करने की ताकत मिलेगी.

- बाप ने कल्प पहले भी कहा था, अभी भी कहते हैं कि मैं इस ब्रह्मा के साधारण तन में बहुत जन्मो के अन्त में प्रवेश करता हूँ, जबकि इनकी वानप्रस्थ अवस्था होती हैं तब मैं ब्रह्मा के तन का आधार लेता हूँ. ब्रह्मा की आत्मा ने ही सबसे पहले ८४ जन्मो का चक्र पुरा किया हैं.

- बाबा कहते हैं बाप एक ही बार आते है सारे कल्प में सर्व की सद्गति करने, सर्व आत्माओं की भविष्य के लिए प्रालब्ध बनाने और इस धरा पर नई सतयुगी दुनिया स्थापन करने. बाप आते है तुम्हें राजयोग सिखलाने जिसे तुम राजाओं के राजा बनते हो. तुम्हारी योगबल से ही इस धरती पर सतयुग की स्थापना होगी.

- बाबा कहते हैं मैं ही पतितों को पावन बनाने वाला हूँ. मैं ही आकर सभी वेदों-शास्त्रों आदि का सार सुनाता हूँ. भक्ति मार्ग में है अल्पकाल क्षणभंगुर सुख. यह ज्ञान से तुम्हें २१ जन्म सुख मिलता है जो तुम्हें सर्व का सद्गति दाता बाप स्वयं देते है.

- बाबा कहते हैं तुम्हें दिलवाला बाप मिला है - सर्व का सद्गति करने वाला, सर्व का दुख हरकर सर्व को सुख देने वाला. भक्ति में भी ऊंच ते ऊंच महिमा है शिव की. वह बाप स्वयं

तुम्हें समझाते है कि भक्ति न देवतायें करते है, न सन्यासी करते है. सन्यासी है ब्रह्म ज्ञानी या तत्व ज्ञानी. सारे कल्प में तुम ब्राह्मणों के सिवाय और किसी को भी बाप का इन्ट्रोडकशन नहीं मिलता. सारे कल्प में तुम ही हो जो बाप को मिलते हो, जानते हो और उनसे योग लगाते हो.

- बाबा कहते हैं - बच्चे, देह सहित देह के सब धर्म त्याग, अपने को अशरीरी आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो. अभी बाप तुम्हें आत्म-अभिमानी बनाते हैं. अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करने से तुम्हारी आत्मा में पड़ी विकारों रुपी खाद निकल जाती हैं.

- बाबा कहते हैं शांति का सागर बाप ही आकर तुम्हें पवित्रता, सुख और शांति का वर्सा देते है. इस धरा पर सतयुग की स्थापना करते हैं.

- बाबा कहते हैं बाबा तुम्हें मंदिर में जाने कि मना नहीं करते हैं. लेकिन अब तुम मंदिर में जायेंगे तो हर एक का आक्यूपेशन जानते हो. आगे तुम बेसमझ बनकर जाते थे, अभी सेन्सीबुल बनकर जाना हैं. तुम्हारी बुद्धि में सारी नॉलेज है. तो नॉलेज को कहा जाता है सोर्स ऑफ इन्कम. मंदिरों में जाकर भी तुम बहुतो कि सेवा कर सकते हो.

- बाबा कहते हैं भारत पहले सतयुग में १०० परसेन्ट सालवेन्ट था, अभी भारत १०० परसेन्ट इनसालवेन्ट पतित है क्योंकि यहां सब विकार से ही पैदा होते हैं. सतयुग में योगबल से पैदा होते हैं. अब तुम अपना तन-मन-धन भारत को स्वर्ग बनाने में खर्च करते हो अपने ऊंच भविष्य के लिए. जितना करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे.

- बाबा कहते हैं मैं तुम्हें जो मत देता हूँ, वह कार्य करो. युनिवर्सिटी खोलो, सेन्टर्स खोलो. बहुतो का कल्याण हो जायेगा. सिर्फ यह मेसेज देना है बाप को याद करो और वर्सा लो.

ॐ शांति.